मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

# बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 55 अंक 5 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
मई 2019 | बहाई वर्ष : 176

### विश्व न्याय मन्दिर

वर्तमान पांच वर्षीय योजना बहाई विश्व द्वारा बीस वर्षों तक किए गए उन प्रयासों का अनुसरण करती है जबकि कार्यकलापों को सुव्यवस्थित तरीके से बेहतर बनाने और उनकी संख्या में वृद्धि करने के प्रयत्न किए गए––किन्तु उल्लेखनीय यह है कि, योजना के आरंभिक ढाई वर्षों में ही, केवल मूल कार्यकलापों की संख्या में आधे से भी ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है।

—रिज़वान 2019

## कर्नाटक में योजना–सत्र का आयोजन

हाल ही में कर्नाटक के बहाइयों की एक बैठक बंगलूरू स्थित दलाई लामा उच्चतर शिक्षा संस्थान के प्रांगण में सम्पन्न हुई, जिसमें बंगलूरू, केंगेरी, मैसूर, मंगलोर, माण्डया और अन्य स्थानों के बहाई मित्रों के अलावा अलग–अलग क्लस्टर से आये मित्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम का आरम्भ मुग्ध कर देने वाली प्रार्थनाओं से हुआ। रवि किरन ने परिचयात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किया और कुमारी एकता ने ताहिरा के साहस और शौर्य की कथा रोचक ढंग से सुनाई, मराठी और अंग्रेजी में जिसे सुन कर लोग जैसे रोमांचित हो उठे। दूसरे दिन मुल्ला हुसैन की वीरता की गाथा लोगों ने सुनी और उनके त्याग और बलिदान की कहानी सुनकर स्तब्ध रह गये।

सलाहकार राजन सावंत ने सन् सत्तर के दशक की एक कहानी मंगलोर बहाई समुदाय से सुनाई, जब वहाँ के दो बहाइयों को स्वप्न में यह प्रेरणा मिली कि वे प्रभुधर्म का संदेश देने अपने–अपने घरों से निकलें, उन्होंने निःस्वार्थ सेवा की, अपने क्षेत्र में प्रभुधर्म का संदेश घर–घर में दिया, जिसका परिणाम यह निकला की अच्छी संख्या में वहाँ से पायनियर बाहर गये और इन भ्रमणशील दो शिक्षकों ने प्रभुधर्म के प्रसार में उन पायनियरों की मदद से प्रभुधर्म की खूब सेवा की।

दो–दिवसीय इस बैठक में रूही पुस्तक पाँच के उन अंशो का पाठ भी किया गया जिनमें एक बहाई की पहचान बतलाई गई है कि उस व्यक्ति को एक प्रार्थनामय जीवन जीने के साथ निरन्तर सेवा–भाव से प्रेरित होना चाहिये। वर्तमान में एक बहाई जो गतिविधियों से जुड़ा रहता है उसे यह विचार और कर्तव्य प्रेरित करते हैं। व्यक्ति के जीवन, उसकी सोच में बदलाव आता है, इसलिये समुदाय में भी बदलाव आता है, नकारात्मक शक्तियाँ कमजोर पड़ने लगती हैं और सकारात्मक शक्तियाँ बलवती होती हैं। बहाउल्लाह ने कहा हैः "मैंने तुम्हें सेवा का ताज पहनाया है।" सेवा के पथ पर चल कर हमारा आध्यात्मिक और बौद्विक विकास होता है।

दोपहर बाद के सत्र में "वाइडेनिंग इम्ब्रेस" वृत्तचित्र को देखने के बाद प्रतिभागियों ने भारत से बाहर के देशों में हो रहे विकास से अपने क्षेत्र के विकास की तुलना की और संतोषप्रद पाया।

योजना सत्र के दूसरे दिन विभिन्न समुदायसमूहों में हुई प्रगति का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया। सफलता की प्रेरक कहानियों द्वारा योजना को सर्वग्राही बनाया जा सका। बाब के द्विशताब्दी समारोह के सिलसिले में चर्चा के लिये जिन बिन्दुओं पर बल दिया गया वे इस प्रकार हैं :

1– बहाउल्लाह के अग्रदूत की भूमिका

2– युगल अवतारों द्वारा संस्थापित धर्म

3– ईश्वर की दृष्टि में युगल अवतारों का एक ही स्थान

4– सभी धर्मों में जिनके आने का उल्लेख है उनका महत्व

5– उनके अवतरण से ईश्वर के धर्म की पुनर्स्थापना

सभी 28 क्षेत्रों के लिये योजना बना कर तैयार कर ली गई और बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव तक लक्ष्यों को हासिल कर लेने का संकल्प सभी प्रतिभागियों ने लिया।



बंगलूरू में आयोजित बैठक के प्रतिभागी

### इस अंक में



## पर्वराज रिज़्वान उत्सव हर्षोल्लास से मनाया

• मध्य प्रदेश में भोपाल समुदाय द्वारा रिज़्वान का उत्सव बहुत ही हर्षोउल्लास के साथ बहाई भवन में मनाया गया। उल्लेखनीय है कि रिज़्वान कार्यक्रम में लोंगो की कम उपस्थिति को देखते हुए इस बार सभा ने यह कार्यक्रम परम्परागत दिन के बजाय रात्रि में रखने का निर्णय लिया और काफी उत्साहवर्धक रूप से लगभग 45 से 50 लोंगों की उपस्थिति के साथ पर्वराज मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कुछ समूह प्रार्थनाओं से करते हुए रिज़्वान की पाती का पाठ किया गया, तदोपरांत सहायक मंडल सदस्य द्वारा स्थानीय सभा के चुनाव के लिये मित्रों का आह्वान करते हुए विश्व न्याय मंदिर के 25 मार्च के पत्र के अध्ययन के साथ दृढ़ीकरण कराते हुए चुनाव सम्पन्न कराया गया। फिर सभा के सचिव व कोषाध्यक्ष ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिज़्वान संदेश 2019 का भी अध्ययन किया गया। पर्वराज रिज़्वान व बहाउल्लाह की महान उद्घोषणा पर परिचर्चा की गई और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ रात्रि भोज के पहले सभा के अनुमोदन के साथ नव निर्वाचित स्थानीय आध्यात्मिक सभा की घोषणा भी की गई।

• महाराष्ट्र में त्रयम्बकेशवर के गांव तोरांगण के साथ नाशिक 2014 से मिलकर कार्य कर रहा है। जहाँ पर गांव के सभी बहाई एकत्रित हुए और उन्होंने 21 अप्रैल 2019 को रिज़्वान का पर्व बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया। इसी सुअवसर पर मित्रों ने अपने गांव की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के लिए मतदान भी किया। तोरांगण में पहली बार स्थानीय आध्यात्मिक सभा चुनी गई, जिसमें 2 महिलायें, 5 युवा और 2 प्रौढ़ सभा के सदस्य के रूप में चुने गये।

• त्रिपुरा में भी स्थानीय आध्यात्मिक सभा का चुनाव रिज़्वान के प्रथम दिवस को किया गया। वहां के पूर्वी धजानगर में स्थानीय सभा चुनी गई, जिसकी विशेषता यह है कि सभा की सभी सदस्य महिलायें हैं, जो की महिला सशक्तिकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।



भोपाल में आयोजित रिज़्वान पर्व में भाग लेने वाले प्रतिभागी



त्रिपुरा के पूर्वी धजानगर की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्य

# विश्व न्याय मन्दिर

## रिजवान 2019

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रों,

अब जबकि 'परम महान उत्सव' निकट आ चुका है, हम आभार और आशा की भावनाओं से अत्यंत आह्लादित हैं––आभार उन अद्भुत कार्यों के लिए जिन्हें पूरा कर पाने में बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों को सक्षम बनाया है, और आशा उन बातों के लिए जो निकट भविष्य के गर्भ में हैं।

बहाउल्लाह के जन्म के द्विशताब्दी समारोह के विश्वव्यापी आयोजनों से उत्पन्न गति तब से बढ़ती ही चली गई है। बहाई समुदाय के विकास में आई तेजी, उसकी बढ़ती हुई क्षमता, और अपने अधिक से अधिक सदस्यों की ऊर्जाओं से लाभ उठा सकने की उसकी योग्यता उसके हाल की वैश्विक उपलब्धियों से स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आई है। इन सबमें, समुदाय–निर्माण सम्बंधी कार्यकलापों में जो प्रगति हुई है, वह खास तौर पर उल्लेखनीय है। वर्तमान पांच वर्षीय योजना बहाई विश्व द्वारा बीस वर्षों तक किए गए उन प्रयासों का अनुसरण करती है जबकि कार्यकलापों को सुव्यवस्थित तरीके से बेहतर बनाने और उनकी संख्या में वृद्धि करने के प्रयत्न किए गए––किन्तु उल्लेखनीय यह है कि, योजना के आरंभिक ढाई वर्षों में ही, केवल मूल कार्यकलापों की संख्या में आधे से भी ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। किसी भी खास समय में, वैश्विक समुदाय ने ऐसी गतिविधियों में, आध्यात्मिक सच्चाइयों की तलाश करने और उनका प्रत्युत्तर देने में उन्हें सहायता प्रदान करते हुए, दस लाख से भी अधिक लोगों को संलग्न कर सकने की अपनी क्षमता का परिचय दिया है। उसी संक्षिप्त समयावधि में, प्रार्थना–सभाओं की संख्या लगभग दोगुनी हो गई––जो कि आशा और उदार कृपा के 'मूल स्रोत' से मानवजाति की बढ़ती हुई दूरी के लिए एक अति आवश्यक प्रत्युत्तर था। यह जो प्रगति हुई है उसकी एक विशेष संभावना है, क्योंकि भक्तिपरक सम्मिलन समुदाय के जीवन में नई चेतना का संचार करते हैं। सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए शैक्षणिक प्रयासों को पिरोते हुए, वे उन प्रयासों के इस उच्च उद्देश्य को बल प्रदान करते हैं: ऐसे समुदायों का पोषण करना जिनकी खासियत है परमात्मा की उनकी उपासना और मानवजाति की सेवा। यह बात उन समुदाय–समूहों से ज्यादा अन्य कहीं उतनी अधिक स्पष्ट नहीं है जहां बहाई गतिविधियों में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी को जारी रखा गया है और जहां मित्रगण अपने समुदाय के विकास के तीसरे मील के पत्थर को पार कर चुके हैं। हम यह देखकर खुष हैं कि जहां विकास की प्रक्रिया इस हद तक आगे बढ़ चुकी है ऐसे समुदाय–समूहों की संख्या 'योजना' के आरंभ से लेकर अभी तक दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है और अब उनकी संख्या लगभग पांच सौ है।

रूपांतरण की जो प्रक्रिया अभी जारी है उसके पैमाने को मापने में यह संक्षिप्त सर्वेक्षण न्याय नहीं कर सकता। 'योजना' के बचे हुए दो वर्षों का परिदृश्य बड़ा ही उज्ज्वल है। उन समुदाय–समूहों में जो, हमारी आशा के अनुरूप, ज्ञान और संसाधनों के भंडार बन चुके हैं, सुदृढ़ विकास–कार्यक्रमों से सीखे गए पाठों के व्यापक संवितरण के माध्यम से, इस पिछले वर्ष बहुत कुछ हासिल किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र, सलाहकारगण, और उनके अथक सहायक मंडल सदस्य यह सुनिश्चित करने के लिए अनवरत प्रयास करते रहे हैं कि दुनिया के सभी हिस्सों में निवास करने वाले बंधु ज्ञान में हुई इस समृद्धि से लाभान्वित हों और जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त हो रही हैं उन्हें वे अपने यहाँ की वास्तविकताओं में क्रियान्वित करें। हम यह देखकर आनन्दित हैं कि बढ़ती हुई संख्या में समुदाय–समूहों, और उनके अंतर्गत आने वाले गांवों और पास–पड़ोसों में, मित्रों का एक नाभिकीय–बिंदु उभर कर सामने आया है, जो अपने क्रिया और समीक्षा के माध्यम से किसी खास समय में अपने आस–पास विकास की प्रक्रिया की प्रगति के लिए आवश्यक तत्वों की तलाश में जुटे हैं। वे संस्थान रूपी सक्षम उपकरण से संबल प्राप्त कर रहे हैं जिसके माध्यम से समुदाय की आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि में योगदान देने की क्षमता का विकास हो रहा है, और उनकी सक्रियता के कारण, उनके साथ भागीदारी निभाने वाले मित्रों की संख्या भी बढ़ रही है। स्वाभाविक बात है कि अलग–अलग स्थानों में इन स्थितियों में अन्तर है, और साथ ही विकास सम्बंधी विशेषताओं में भी फर्क है। लेकिन सुव्यवस्थित प्रयास के माध्यम से, हर कोई मौजूदा कार्य में अपना अधिक से अधिक प्रभावी योगदान दे सकता है। हर परिवेश में, अन्य लोगों को ऐसे सार्थक और उत्प्रेरक वार्तालापों में शामिल करना एक विशुद्ध आनन्द का विषय है जो, शीघ्र या क्रमिक रूप से, आध्यात्मिक संवेदनाओं को स्पंदित करने की दिशा में ले जाते हों। आस्थावान व्यक्ति के हृदय में जितनी ही प्रखर लौ प्रज्ज्वलित की जाएगी उसकी उष्मा के संसर्ग में आने वाले लोगों द्वारा महसूस की जाने वाली आकर्षण की शक्ति भी उतनी ही प्रबल होगी। और जो हृदय बहाउल्लाह के प्रेम से अनुप्राणित है उसके लिए ऐसे आत्मीय चेतना–सम्पन्न लोगों की तलाश, सेवा के पथ पर अग्रसर होने पर उन्हें प्रोत्साहित करने, जब वे अनुभव प्राप्त कर लें तो उनका साथ निभाने और––संभवतः सबसे ज्यादा आनन्द का विषय––उन लोगों को प्रभुधर्म में पुष्ट होते, स्वतंत्र रूप से सेवा के लिए उठ खड़े होते और उस समान यात्रा में अन्य लोगों की सहायता करते हुए देखने से ज्यादा उपयुक्त किस कार्य की कल्पना की जा सकती है! इस क्षणभंगुर जीवन में ये ही सबसे ज्यादा अभिलषित क्षण हैं।

बाब के जन्मोत्सव की द्विशताब्दी पास आने के कारण इस आध्यात्मिक उद्यम को आगे बढ़ाने के परिप्रेक्ष्य और भी अधिक रोचक बन गए हैं। इससे पहले वाली द्विशताब्दी की तरह ही, यह वार्षिकोत्सव भी एक अपरिमित रूप से मूल्यवान अवसर है। यह सभी बहाईयों को अपने आस–पास के लोगों को 'ईश्वर के महान दिवस' के प्रति, 'दिव्य अस्तित्व' के दो प्रकटावतारों, विश्व के क्षितिज को दीप्तिमान बनाने वाले एक के बाद एक आने वाले दो 'प्रखर नक्षत्रों', द्वारा संकेतित स्वर्गिक कृपा के असाधारण प्रवाह के प्रति, जागरूक करने के लिए विलक्षण अवसर उपलब्ध कराता है। दो वर्ष पूर्व मनाए गए द्विशताब्दी समारोह के अनुभवों के कारण, आने वाले दो चक्रों में क्या कुछ संभव हो सकता है उसका परिमाप सबको ज्ञात है, और उस अवसर पर जो कुछ भी सीखा–समझा गया उन सबको इस वर्ष मनाए जाने वाले 'युगल पावन जन्मोत्सवों' के लिए सुनियोजित किया जाना चाहिए। अब जबकि दो सौवें वर्ष का वार्षिकोत्सव निकट आ रहा है, हम आपकी ओर से 'पवित्र समाधियों' पर निरन्तर वन्दना करेंगे, और यह प्रार्थना करेंगे कि बाब को समुचित सम्मान देने के लिए आपके द्वारा किए जाने वाले प्रयास 'उनके' द्वारा पूर्वघोषित धर्म को और आगे बढ़ाने में सफल हों।

रचनात्मक युग की प्रथम शताब्दी के समापन में अब सिर्फ ढाई वर्ष रह गए हैं। इसके साथ ही, प्रभुधर्म के शौर्य काल के दौरान अत्यंत त्याग की भावना से रखी गई प्रभुधर्म की बुनियाद को सुदृढ़ करने और उसके विस्तार के लिए किए गए पावन प्रयासों के सौ वर्षों की परिसमाप्ति हो जाएगी। उसी समय बहाई समुदाय अब्दुल–बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी भी मनाएगा––उस क्षण की शताब्दी जब प्रिय मास्टर स्वर्गिक महिमा की आश्रय–स्थली में 'अपने पिता' से पुनर्मिलन के लिए इस संसार की सीमाओं से मुक्त हो गए थे। अगले ही दिन सम्पन्न हुई उनकी शव–यात्रा एक ऐसी घटना थी "जैसी फिलिस्तीन ने पहले कभी नहीं देखी थी।" इसकी समाप्ति पर, उनके पार्थिव अवशेषों को बाब की समाधि के एक प्रकोष्ठ में चिर–विश्रान्ति के लिए रख दिया गया था। लेकिन शोगी एफेन्दी की परिकल्पना यह थी कि यह एक अस्थायी व्यवस्था होगी। उपयुक्त समय आने पर, एक ऐसी समाधि का निर्माण किया जाना था जिसकी विशेषता अब्दुल–बहा के अद्वितीय पद के सुयोग्य हो।

अब वह समय आ गया है। बहाई विश्व का आह्वान किया जाता है कि वह एक ऐसे भवन का निर्माण करे जहां सदा–सदा के लिए उन अवशेषों को स्थापित किया जा सके। उसका निर्माण रिज़्वान के उद्यान के निकट होना है उस भूमि पर जो 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के चरण–चिह्नों से पावन हुई है; इस तरह अब्दुल–बहा की समाधि अक्का और हाइफा की पवित्र समाधियों के बीच के अर्द्ध–चंद्राकार से दिखते स्थान में अवस्थित होगी। भवनशिल्प की योजनाओं पर काम आगे बढ़ रहा है, और आने वाले महीनों में और अधिक सूचनाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

और अब जब हम आने वाले वर्ष और उसकी संभावनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो हमारे मन में अत्यधिक हर्ष की भावना उमड़ उठती है। आप में से प्रत्येक व्यक्ति से––उन सबसे जो बहाउल्लाह की सेवा में जुटे हुए हैं, जो हर राष्ट्र में शांति के ध्येय के लिए प्रयासरत हैं––हम आशा करते हैं कि आप अपने महान दायित्व को पूरा करेंगे।

– विश्व न्याय मन्दिर

## झारखण्ड की गतिविधियाँ

• जमशेदपुर स्थित बहाई केन्द्र में राज्य स्तरीय किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम की पुस्तक से संबंधित लेवल ट्रेनिंग का आयोजन प्रशिक्षण संस्थान मंडल, झारखंड की ओर से 6 एवं 7 अप्रैल 2019 को किया गया, जिसमें जमशेदपुर, आसनबनी, पटमदा, मानगो क्लस्टरों से 31 अनुप्रेरको ने भाग लिया। इस लेवल ट्रेनिंग में दो पुस्तकों का अध्ययन किया गया। पहले समूह में सीधी राह पर चलना पुस्तक का अध्ययन किया गया, इसमें कुल 8 अनुप्रेरक शामिल हुए। दूसरे समूह में आशा की किरण पुस्तक का अध्ययन 23 अनुप्रेरकों के साथ हुआ। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य अनुप्रेरकों को पुस्तकों की अवधारणाओं से अवगत कराना था। साथ ही साथ कैसे अधिक से अधिक समूह बची हुई पुस्तकों का अध्ययन करें। अभियान का वातावरण काफी उत्साहपूर्वक था। अभियान के दौरान अनुप्रेरको के मनोरंजन हेतु गीत, संगीत, खेल आदि मनोरंजनात्मक कार्य भी किये गए।



किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम से संबंधित लेवल ट्रेनिंग में भाग लेने वाले प्रतिभागी

• जमशेदपुर स्थित बहाई केंद्र में ही 23 से 27 अप्रैल 2019 को पुस्तक–5 से संबंधित संशोधित दस्तावेज का अध्ययन किया गया, जिसमें पाँच क्लस्टरों से 25 मित्रों ने भाग लिया। इस अभियान का उद्देश्य पुस्तक पाँच की अवधारणाओं से पुनः अंगीकार होना था तथा पुस्तक–5 लेने की क्षमता को बढ़ाना था, ताकि आगामी महीनों में अधिक से अधिक मित्रों के साथ पुस्तक–5 का अध्ययन समाप्त किया जाये। साथ ही साथ अनुप्रेरकों की संख्या में अधिक से अधिक वृद्धि हो। अध्ययन के दौरान मनोरंजन हेतु खेल, कहानी, गीत आदि मनोरंजन कार्य किये गए। इस अभियान के दौरान अनुप्रेरकों के साथ कई महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर चर्चा की गयी, जैसे– किशोरों पर भौतिक वातावरण के प्रभावों को रोकना तथा कम करना, किशोरों के माता–पिता के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप, किशोर समूह का वातावरण, इलेक्ट्रॉनिक्स प्रभाव, आदि सम्बंधित तत्वों पर चर्चा की गयी।




पुस्तक–5 से संबंधित संशोधित दस्तावेज के अध्ययन में शामिल होने वाले प्रतिभागी

### निवेदन

प्रिय मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें बहाई समाचार में प्रकाशित कर सकें।

*धन्यवाद !*

## समाचारचित्र



मध्य प्रदेश में भोपाल के बहाई संजय जोगी का विवाह दतिया की कुमारी भावना योगी के साथ बहाई विधिविधान के अनुसार स्थानीय आध्यात्मिक सभा भोपाल के तत्वावधान में 17 अप्रैल 2019 को सम्पन्न हुआ।



श्री सुजीश प्रभाकरन और सुश्री रशिका करुणाकरण का विवाह 23 फरवरी, 2019 को गुजरात में बहाई विधिविधान के अनुसार स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।



भोपाल क्लस्टर के इन्द्रपुरी क्षेत्र में बच्चों की कक्षाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है, जिसमें कई बच्चे बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेते है और अपने दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाली आदतों को विकसित करने के साथ ही ईश्वर के प्रति निष्ठावान तथा उसके द्वारा दिये गये आध्यात्मिक गुणों को धारण करने का प्रयास कर रहे हैं। यह बच्चों की कक्षा स्थानीय स्तर पर माता–पिता को बहुत प्रभावित करती हैं जिससे इन कक्षाओं को संचालित करने में उनका पूरा सहयोग प्राप्त किया जाता है।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

## बदवार क्लस्टर में भ्रमण और बैठक

मध्य प्रदेश परिषद के सचिव, परिषद सदस्य एवं भोपाल इकाई के प्रतिनिधि द्वारा बदवार क्लस्टर में 31 मार्च 2019 को स्थानीय आध्यात्मिक सभा के साथ मिलकर, बहाई भवन के निर्माण कार्य का भ्रमण किया। साथ ही सभा के साथ संयुक्त बैठक करने का महत्व के बारे में बतलाया ताकि भविष्य में बहाई मित्रों को समुदाय या परिवार की तरफ से किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े। यह चर्चा इतनी प्रभावपूर्ण रही कि उसी समय सभा के कुछ सदस्यों ने तुरंत अपना वसीयत नामा लिखा और स्थानीय सभा को सौंप दिया।



**बदवार के भ्रमण के उपरान्त चर्चा और परामर्श में भाग लेने वाले प्रतिभागी**

सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसमें समुदाय की बहाई गतिविधियों को नियमित बनाये रखने तथा उसमें युवाओं एवं समुदाय की महिलाओं के योगदान पर विस्तार से परामर्श किया। परिषद सचिव ने सभा की मांग को ध्यान में रखते हुये उनके साथ बहाई विधिविधानों एवं बहाई अंतिम संस्कार पर गहन परामर्श किया और उपस्थित मित्रों को उसके महत्व के बारे में बताते हुये उसके महत्वपूर्ण निर्देशों के बारे में समझाया जैसे कि मृतक को किस दिशा में रखना चाहिए, उसको किस कपड़े में लपेटना चाहिए साथ ही कपड़े को किस प्रकार काटना चाहिए इत्यादि।

इसके अलावा, यह भी परामर्श किया गया कि बदवार एक ग्रामीण समुदाय होने के कारण जरूरी है कि बहाई मित्रों को अपना व्यक्तिगत वसीयत नामा लिखने तथा उसके इसके अलावा स्थानीय सभा के चुनाव एवं बहाई कार्यक्रमों में महिलाओं की प्रतिभागिता के विषय में परामर्श किया गया, ताकि गतिविधियों और अन्य कार्यक्रमों में वह भी शामिल हो सकें और समुदाय निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे सकें। जिसका परिणाम यह निकला कि बदवार समुदाय में बहुत समय के बाद एक महिला सदस्य चुन कर आई है जो अब स्थानीय सभा के सदस्य के रूप में अपनी सेवायें देंगी।

अंत में सभा ने परिषद से यह विचार विमर्श किया कि इस प्रकार का दृढ़ीकरण कार्यक्रम नियमित रूप से क्षेत्र एवं बदवार की स्थानीय सभा के साथ करते रहना चाहिए ताकि सभाओं को बहाई विधिविधान का अनुपालन करने में सुविधा हो और वह अपने समुदाय में इनको लागू करने का प्रयास कर सकें।

## केरल में क्लस्टर स्तर पर परामर्शीय बैठक

केरल राज्य बहाई परिषद के निर्णयानुसार, क्लस्टर स्तर की एजेंसियों के लिए दो क्षेत्रीय सभाओं का आयोजन किया गया। पहली सभा कन्नूर बहाई भवन पर 24 मार्च 2019 को कान्हंगद क्लस्टर से तिरूर क्लस्टर और दूसरी कोच्चि बहाई भवन पर 31 मार्च 2019 को पलक्कड़ क्लस्टर से तिरुवनंतपुरम क्लस्टर के मित्रों के लिए थी। कन्नूर और कोच्चि में क्रमशः सात स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं से एवं तीन क्लस्टर विकास समितियों से 20 अनुयायियों ने भाग लिया और 5 स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं से एवं चार क्लस्टर विकास समितियों से 19 अनुयायियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में, बहाई प्रशासन का विकास, स्थानीय आध्यात्मिक सभा में अनुयायियों के साथ कार्य और जुड़े रहना, स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के क्लस्टर विकास समिति और राज्य बहाई परिषद के साथ संबंध, स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं और क्लस्टर विकास समितियों का दायित्व, उन्नीस दिवसीय सहभोज, पवित्र दिवसों को मनाना, बैठकों की नियमितता, कोष, चुनाव, समीक्षा बैठकें, विस्तार चरण और सांख्यिकी आदि विषयों पर चर्चा हुई।

उपरोक्त विषयों पर चर्चा के आधार पर क्लस्टर विकास समिति और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने अनुयायियों और ऐसे लोग जो समुदाय निर्माण की गतिविधियों से संबंधित हैं उनके होमविजिट करने की योजना बनाई। बाब की द्वि–शताब्दी से पूर्व ये भ्रमण कर लिये जायेंगे। प्रतिभागियों में से 6 परिवारों ने क्लस्टरों की अपनी इकाइयों में यात्राओं के लिए पहल की। अन्य परिवार और अनुयायी समीक्षा बैठक के दौरान अपने भ्रमण की योजना बनायेंगे।

## बहाई विश्व केन्द्र में सेवा के अवसर

जैसे–जैसे दुनिया के हर भाग में प्रभुधर्म के कार्य फैलते जा रहे हैं वैसे–वैसे बहाई विश्व केन्द्र की प्रभावशाली कार्यविधि का महत्व बढ़ता जा रहा है। प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र का वर्णन शोगी एफेंदी द्वारा कुछ इन शब्दों में किया गया है : विश्व केन्द्र "नई विश्व व्यवस्था की एजेंसियों की धुरी है," यह विविध देशों से आये अनुयायियों के निरन्तर प्रवाह से सम्बलित है, जो निःस्वार्थ भाव से सेवा की एक निश्चित अवधि के लिये आते हैं, जो अवधि भिन्न–भिन्न हुआ करती है। विश्व केन्द्र में स्टॉफ की ज़रूरत विभिन्न कामों के लिये होती है, जो उपलब्ध संसाधनों और बढ़ती हुई ज़रूरतों के आधार पर निर्भर करते हैं। किसी ख़ास समय में सुयोग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों की ज़रूरत होती है। तो किसी अन्य समय में सामान्य काम–काज के लिये ज़रूरत होती है। विश्व केन्द्र में सेवा की प्रकृति के कारण 12 महीने या अधिक समय के लिये यह ज़रूरत पड़ती है। इच्छुक व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिये।

सेवा देने के इच्छुक किसी भी मित्र को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाता है कि वह सीधे तौर पर अपना आवेदन https:/bahai.bwc.org/service/ पर भेज कर कार्मिक विभाग से सम्पर्क करे।

कुल पृष्ठ संख्या–4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.5. 2019
**Sender's Address:**
**6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.**
**New Delhi - 110 001 - INDIA**

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)